दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 14.09.2023

प्रकाशनार्थ

दिनांक 14.09.2023 गोरखपुर। साहित्यार्चन हिन्दी विभाग दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर के संयोजकत्व में हिन्दी दिवस के अवसर पर विशिष्ट व्याख्यान में बोलते हुए मुख्य वक्ता डॉ. दिवाकर द्विवेदी, सहायक आचार्य, भवानी प्रसाद पाण्डेय स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर ने कहा कि किसी भी देश का साहित्य वहां की संस्कृति व परम्परा से जाना जाता है। जब कोई देश दूसरो के द्वारा शासित होता है तो वहा की बहुत सारी परम्पराएं व सभ्यता नष्ट होने लगती है, ऐसी स्थिति में इन्हें समय से संरक्षित रखना हमारा मूल दायित्व है। हिन्दी के उन्नयन में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द एवं राजा लक्ष्मण सिंह का विशेष योगदान दिखाई पड़ता है। पाठ्यक्रम की पुस्तकें पहले हिन्दी में उपलब्ध न होकर दूसरी भाषाओं में थी, इसीलिए हिन्दी में उपन्यास व कहानी लेखन पर जोर दिया गया ताकि लोग अपनी भाषा में अपने साहित्य व समाज को समझ सकें। इसी क्रम में हिन्दी भाषा को जन आन्दोलन के रूप में आगे बढ़ाने का कार्य किया गया। संविधान सभा में 14 सितम्बर सन् 1949 को यह तय किया कि भारतीय संघ की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखित राजभाषा हिन्दी होगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि हिन्दी हमारी राष्ट्रीय स्वाभिमान, पहचान एवं अस्मिता से जुड़ी है। दुनिया में चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। वास्तव में हिन्दी अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। हिन्दी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा में ऐसी क्षमता नहीं है जो राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित हो सके। स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गॉधी, सी.राजगोपालाचारी एवं पुरूषोत्तम दास टण्डन आदि ने हिन्दी को लोकभाषा के रूप में राष्ट्रीय चेतना के प्रसार हेतु प्रतिष्ठित करने में योगदान दिया, परन्तु अंग्रेजी विषय में राजकार्य की प्रामाणिकता ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थापित होने में ठहराव पैदा किया। व्यक्तित्व की स्वायत्तता के लिए भाषा की प्रासंगिकता है, आज नागरिक सक्रियता के माध्यम से हिन्दी को स्वाभाविक आचरण में लाने की जरूरत है।

कार्यक्रम में विषय प्रवर्तन डॉ. विभा सिंह, आभार ज्ञापन प्रो. नित्यानन्द श्रीवास्तव, प्रभारी हिन्दी विभाग एवं संचालन डॉ. अदिति दूबे ने किया। उक्त अवसर पर आई.क्यू.ए.सी के समन्वयक प्रो. परीक्षित सिंह, श्री भगवान सिंह, डॉ. राकेश सिंह, डॉ. राम प्रसाद यादव, श्री इन्द्रेश पाण्डेय, डॉ. सुनील सिंह सहित महाविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित रहें।

(डॉ.) सुनील कुमार सिंह
सह–प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क